[redacted]

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 74 अंक : 24
सृष्टि संवत् 1960853118
10 सितम्बर, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-74, अंक : 24, 7-10 सितम्बर 2017 तदनुसार 26 भाद्रपद सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

स्वराज्यार्थ यत्न

-ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आ यद्वामीयचक्षसा मित्र वयं च सूरयः।
व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये।।

ऋ. ५।६६।६

शब्दार्थ-हे **ईयक्षसा** = प्राप्तव्य ज्ञानवाले **मित्रा** = प्रीतियुक्त स्त्री-पुरुषो ! **वाम्** = आप दोनों के **सूरयः** = विद्वान् **च** = और **वयम्** = हम मिलकर **व्यचिष्ठे** = अति विशाल **बहुपाय्ये** = अनेक मनुष्यों से रक्षणीय **स्वराज्ये** = स्वराज्य में **आ** + **यतेमहि** = सब ओर से यत्न करें।

व्याख्या-संसार में क्षुद्र-से-क्षुद्र कोई ऐसा प्राणी न मिलेगा, जो अपनी गतिविधि में प्रतिबन्ध को पसन्द करे। सभी चाहते हैं कि उनकी गति निर्बाध रहे। वेद में मार्ग के सम्बन्ध में प्रार्थना है कि वह 'अनृक्षर:' काँटों से रहित हो। काँटे मार्ग की बाधा हैं। बाधा से रहित मार्ग प्रशस्त माना जाता है, और प्रशस्त होता भी है। ऐसी स्थिति में स्वराज्य की कामना अस्वाभाविक नहीं, अतएव अपराध भी नहीं। जो दूसरे की गतिविधि में प्रतिबन्ध लगाता है, जब कभी उसकी गतिविधि पर प्रतिबन्ध लगता है तब उसे ज्ञात होता है कि स्वाधीनता-स्वतन्त्रता-स्वराज्य क्या वस्तु है। वेद स्वराज्य का सबसे अधिक समर्थक है। वेद में एक समूचा-का-समूचा सूक्त (ऋग्वेद १।८०) स्वराज्य-प्रतिपादक है। इस स्वराज्य-सूक्त के प्रत्येक मन्त्र की टेक है-**'अर्चन्ननु स्वराज्यम्'** [स्वराज्य के अनुकूल कार्य करता हुआ]। 'स्वराज्य' के सम्बन्ध में दो-एक निर्देश इस मन्त्र में हैं, जो मनन करने योग्य हैं-

(१) **'स्वराज्य'** में तथा स्वराज्य प्राप्ति के लिए विद्वानों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। विद्वानों के बिना स्वराज्य का सँभालना दुष्कर हो जाता है।

(२) स्वराज्य **'बहुपाय्य'** है। अनेक जन मिलकर ही इसकी रक्षा कर सकते हैं। स्वराज्य तभी स्वराज्य हो सकता है, जब सभी को यह प्रतीत हो कि यह अपना राज्य है। किसी एक का एक-छत्र राज्य उसके लिए भले ही स्वराज्य हो, किन्तु उस राज्य में रहने वाले सभी का वह स्वराज्य नहीं हो सकता। स्वराज्य में सभी स्वराज्य अनुभव करें।

वैदिक भारत-कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत-कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

-प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

(३) स्वराज्य **'व्यचिष्ठ'** विशाल होना चाहिए। क्षुद्र स्वराज्य के अपहृत और नष्ट होने की सम्भावना का भय बना रहता है। विशाल स्वराज्य में उसके रक्षक बहुत होंगे, अत: उसके विनाश की सम्भावना भी कम होती है।

(४) स्वराज्य के लिए जब सबको ममता होगी, तो सभी उसके लिए **'यतेमहि'** पुरुषार्थ करेंगे और सब प्रकार का पुरुषार्थ करेंगे।

स्वराज्य का महत्त्व ऋषि ने इन शब्दों में लिखा है-

''कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रहरहित अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।''

-सत्यार्थप्रकाश, अष्टमसमुल्लास

आद्य और आज के ऋषि का भाव कितना समान है। स्वराज्य की भावना का विरोध अस्वाभाविक है।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

वेद-विहार

अथर्ववेदाधिकरण

-ले० स्वर्गीय श्री शान्ति स्वरूप गुप्त

कुछ तथाकथित पाश्चात्य एवं अंग्रेज़ी शिक्षाविदों का मत है कि सृष्टि के आदि में प्रकट होने वाले अन्य वेदों की भाँति अथर्ववेद अपौरुषेय नहीं है क्योंकि ब्राह्मणों एवं उपनिषदों में तीन ही वेदों का उल्लेख मिलता है। तैत्तिरीय ब्राह्मण में इसका उल्लेख है-**'यं ऋषयस्त्रयी वेदो विदुः ऋचः सामानि यजूंषि'। पाणिनि ने भी अथर्व का प्रकट नाम नहीं लिया। उन्होंने 'शौनकादिभ्यश्छन्दसि'** (४-३-१०६) सूत्र में अथर्ववेद का उल्लेख किया है। अथर्ववेद पर कौशिक सूत्र का भी उन्हें ज्ञान था-'**काश्यपकौशिकाभ्या मृषिभ्यां णिनिः**' (४-३-१०३), साथ ही अथर्ववेद का भी उन्हें ज्ञान था-'**आथर्विकाणां धर्म आग्रायो आथर्वणः।**' वेद के भी निम्नांकित मंत्र से यही सिद्ध होता है।

तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद् यजुः तस्माद् अजायत।। यजुर्वेद ३१-७

यस्य महतो भूतस्य निश्वसितमेतद् यद्

ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः। बृह० उ० २।४।१०

तत्रापरा ऋग्वेदो यजुर्वेद सामवेदोऽथर्ववेदः शिक्षा कल्पो०।

-मुण्डकोपनिषद् २।५

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि 'त्रयी' शब्द से जो तीन ही वेदों को ईश्वरकृत स्वीकार करते हैं, वे अन्धकार में हैं।

अथर्ववेद को वेद न मानने वाले लोग यह दूसरी युक्ति देते हैं कि उसमें जादू टोना, झाड़-फूँक, वशीकरण, उच्चाटन, अभिचार, कृत्या आदि कोशिक सूत्रानुसार अनेक ऊट-पटांग विषयों का वर्णन है। किन्तु इसके विपरीत अथर्ववेद के बीस काण्डों में विभक्त ४६७७ मन्त्रों में जीवन में पग-पग पर व्यवहार में आने वाले आयुर्वेद, वनस्पति-शास्त्र, गार्हस्थ्य-शास्त्र, कामशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति, युद्धनीति, शासन-व्यवस्था, राज्य-संचालन, समाज शास्त्र एवं शरीर-विज्ञान आदि अनेक उपयोगी विषयों का ही वर्णन है। अथर्ववेद में जिन तथाकथित ऊट-पटाँग विषयों का वर्णन है, उनका विश्लेषण करने पर प्रतीत होगा कि किस प्रकार अनुवादकों की भूल से अर्थ का अनर्थ कर दिया गया है!

(१) जादू-टोना प्रथम काण्ड के प्रथम सूक्त में 'मेधाजनन' कर्मों का वर्णन है। कौशिक के मतानुसार गूलर, ढाक, वट, पीपल आदि की समिधाओं का चयन करना; जौ, तिल, चावल आदि की आहुति देना; पुष्टिप्रद पदार्थों का भोजन करना; सोते हुए उपाध्याय के कान में मन्त्र का जप करना और उन्हें भिक्षा लाकर देना; तोता-मैना आदि पक्षियों की जिह्वा बाँधना आदि कर्म करते हुए 'ये त्रिषप्ताः' आदि सूक्तों का जप करना चाहिए। उपनयन के समय ब्रह्मचारी भी इसका जप करे एवं अर्थार्थी अपने बाएँ हाथ के रक्त में दधि, मधु, जल आदि मिश्रित करके भक्षण करे। इसके अतिरिक्त पुत्र-प्राप्ति, सुन्दर स्वास्थ्य एवं तेजस्वी होने के लिए भी इसका जप करना चाहिए। लेकिन वेद-विद् सम्यक् विज्ञ हैं कि 'ये त्रिषप्ताः' के चारों मन्त्रों में कहीं भी इस प्रकार के कपोल-कल्पित कर्मों का उल्लेख नहीं है। इस सूक्त में तो बल, ज्ञान एवं विद्या-बुद्धि के वर्द्धनार्थ प्रार्थना है। कल्पकार ने उपर्युक्त तीनों से उपलब्ध समस्त कर्मों को इससे सम्बन्धित कर दिया है। अतः, अन्ध-विश्वास के कारण अनभिज्ञ लोग इसको भी मन्त्र की ही टीका मान लेते हैं।

अग्नि में गूलर, वट आदि वृक्षों के काष्ठ की आहुति में एक रूपक है कि जिस प्रकार अग्नि में काष्ठ डालने से प्रकाश होता है, उसी **प्रकार गुरु रूपी अग्नि के संसर्ग में आ जाने पर शिष्य के हृदय में भी ज्ञानाग्नि प्रज्वलित हो उठती है। यज्ञ में सुगन्धित द्रव्यों की आहुति देने से जिस प्रकार वातावरण शुद्ध हो जाता है, उसी प्रकार गुरु की संगति से शिष्य की भी बुद्धि अधिकाधिक परिष्कृत होती रहती है।** मनुष्य के समान वाणी बोलने वाले पक्षियों की उपमा देकर यह स्पष्ट किया गया है कि जिस प्रकार पक्षियों को पिञ्जर-बद्ध करके उन्हें जो सूक्ति सिखाई जाती है वही वे बोलने लगते हैं, उसी प्रकार गुरुगृह में रहकर शिष्य भी अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखकर वेदाध्ययन में ही उसका उपयोग करें। इससे उनकी विद्या, बुद्धि एवं ज्ञान में वृद्धि होगी। यही इस सूक्त का प्रतिपाद्य विषय है।

(२) चातन-सूक्त आविष्ट भूतपिशाचाद्युच्चाटनार्थ फलीकरण-तुषावतक्षण-होमादीनि कर्माणि अनेन मन्त्रेण कुर्यात्।

सायणाचार्य ने अर्थ किया है कि मनुष्य-शरीर में प्रवेश करके कष्ट पहुँचाने वाले भूत-पिशाचादि के उच्चाटनार्थ इस सूक्तोक्त मन्त्रों का प्रयोग किया जाय। किन्तु अन्न के रक्षणार्थ भूसी आदि विजातीय द्रव्यों को जैसे कूट-फटक कर पृथक् कर दिया जाता है इसी रूपक से यहाँ यह निर्देश है कि प्रजा को कष्ट प्रदान करने वाले चोर-जार आदि दुष्ट व्यक्तियों को भी राजा शीरीरिक अथवा मृत्यु-दण्ड देकर प्रजा का रक्षण करें। इस सूक्त में भूत-पिशाचादिक का कहीं नाम भी नहीं आया है। ज्ञात नहीं, सायण की बुद्धि में यह कल्पना कहाँ से आ गई ?

मन्त्र है-

स्तुवानमग्न आ वह, यातुधानं किमोदिनम्,

त्वं हि देव वन्दितो दाता दस्योर्बभूविथ।

-अथर्व० १।७।१

[हे प्रजावन्दित राजन् ! तुम अग्नि के समान तेजस्वी होकर प्रजापीडक लोगों के हन्ता और हिसांशील, पीडादायक, जान-माल के हर्ता राक्षसों को दण्ड देने वाले हो। अतः, दुष्ट पुरुषों को पकड़-कर उन्हें दण्ड प्रदान करो।]

देव-प्रकाशमान् राजन्, त्वं हि तू, अग्नि-अग्निवत् तेजस्वी, वन्दितः-नमस्कार-योग्य, स्तुवानं-हिंसाशील, दस्योः चोर-जार आदि का, यातुधानं-पीडादायक, हन्ता-हनन करने वाला है, किमोदिनं आवह-सब तरह से पकड़ ला।

(३) भगम् अस्या वर्चं व्यवहृत माला के अनुसार इस सूक्त में दातून, केशादि को भूमिसात् करने की क्रियाओं के द्वारा शत्रु को दुर्भाग्य के गर्त में गिराने का वर्णन है। इसके विपरीत इस सूक्त में कन्यादान एवं वैवाहिक विधियों का उल्लेख है।

भगमस्या वर्च आदिष्यधि वृक्षादिव स्रजम्।

महाबुध्न इव पर्वतो ज्योक् पितृष्वास्ताम्।।

अथर्व० १।१४।१

[वृक्षाद् अधि-वृक्ष से, स्रजम् इव-फूल के समान, अस्याः इस (अभिमत कन्या के), भंग (गृहस्थ के योग्य), वर्चः-ब्रह्मचर्य को, आदिषि-स्वीकार करता हूँ, पितृषु-अपने माता-पिता के बीच, महाबुध्न बड़े मूल वाले, पर्वत इव-चट्टान के समान, आस्ताम्-गृहस्थाश्रम में दृढ़ रहे।]

इस मन्त्र में ब्रह्मचर्य के पश्चात् समुचित पात्र के साथ कन्या के ग्रन्थिबंधन का वर्णन है किन्तु सायण ने इसका वर्णन भी स्त्री-दौर्भाग्य मूलक किया है।

(४) ये अमावास्यां रात्रिम् कौशिक ने शत्रुसंहारार्थ काँच के चूर्ण को अन्न में मिश्रण करना इसकी व्याख्या की है-

येऽमावास्यां३ रात्रिमुदस्थुर्व्राजिमत्त्रिणः

अग्निस्तुरीयो यातुहा सो अस्माभ्यमधि ब्रवत्।

अथर्व० १।१६।१

ये-जो (दुष्ट पुरुष), अमावास्याम्-प्रकाशरहित, रात्रिम्-तामसी निशा में, अत्त्रिणः-परधन-स्तेयी, व्राजं-डाकू, उदस्थु-शक्तिशाली हो जाने पर, तुरीयः-विनाशकारी, यातुहा-शत्रुनाशक, अग्निः-सेनापति, अस्मभ्यम्-हमारे लिए, अधि ब्रुवत्-उपदेश देते हैं। सरलार्थ है कि निशाकालीन अन्धकार में जन-धन-अपहर्ता चोरों को सेनानायक कठोर दण्ड दें।

सीसायाध्याह वरुणः सीसायाग्निरुपावति।

सीसं म इन्द्रः प्रायच्छत् तदङ्ग यातुचातनम्।।

अथर्व० १।१६।२

यहाँ सेनापति के कर्त्तव्य के सम्बन्ध में उल्लेख है कि वह वारुणास्त्र, आग्नेयास्त्र आदि शस्त्रों में सीसे की गोली मिश्रण कर, अथवा जल, अग्नि, वरुण आदि की ऐसी गोलियों का प्रयोग करें जिनके द्वारा शत्रु का नाश हो।

(५) अनु सूर्यामुदयताम् इस सूक्त में हृदयरोग की चिकित्सा का वर्णन है। परन्तु कौशिक ने लाल बैल के रोम-मिश्रित जल एवं लाल गोचर्म के ताबीज़ बाँधने, अथवा जूठे भात का लेप लगाकर तोते आदि हरे रंग के पक्षियों को आबद्ध करके रोगादि की मुक्ति का उल्लेख किया है। (क्रमशः)

सम्पादकीय

शिक्षक दिवस पर हमारा कर्त्तव्य

5 सितम्बर को हमारे देश के दूसरे राष्ट्रपति एवं महान् शिक्षाविद डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है। यह दिवस एक शिक्षक को उनके कर्त्तव्यों का बोध कराता है। शिक्षक का क्या कार्य होना चाहिए? विद्यार्थियों को उनके लक्ष्य की प्राप्ति में शिक्षक की क्या भूमिका होनी चाहिए, किस प्रकार प्रोत्साहित किया जाना चाहिए? शिक्षक दिवस के अवसर पर इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। एक शिक्षक के साथ-साथ माता-पिता को भी अपनी संतान के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन करना चाहिए। शास्त्रों में बच्चे का प्रथम गुरू माता और उसके बाद पिता को बताया है। माता-पिता के व्यवहार, उनके रहन-सहन तथा आचार-विचार से बच्चा बहुत कुछ सीखता है। बच्चे को सर्वप्रथम व्यवहारिक ज्ञान माता-पिता की गोद में ही मिलता है। इसलिए माता-पिता को चाहिए कि वे बच्चों के पालन-पोषण में सावधानी बरतें। वर्ष 2014 में हमारे देश के माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अध्यापकों और बच्चों को एक प्रेरणादायक उद्‌बोधन दिया था, जिसमें उन्होंने शिक्षकों एवं छात्रों को उनके कर्त्तव्य और जिम्मेदारी का बोध कराया था। उन्होंने शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं एवं उनके उद्देश्यों का उल्लेख किया था जो एक व्यक्ति एवं उनके जीवन से जुड़े हुए हैं। जब तक शिक्षा के मूल उद्देश्यों का ज्ञान नहीं होता जब तक शिक्षा फलदायी नहीं हो सकती। इसके लिए शिक्षक और शिष्य दोनों को अपने-अपने कर्त्तव्य और जिम्मेदारी का अहसास होना चाहिए। शिक्षक दिवस की पूर्व सन्ध्या पर श्री मोदी जी ने शिक्षकों को सम्बोन्धित करते हुए कहा था कि शिक्षा देना नौकरी या पेशा नहीं जीवन धर्म है। उन्होंने कहा कि बदलाव को देखते हुए और नई पीढ़ी को इसके लिए तैयार करने के लिए शिक्षकों को समय से दो कदम आगे रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक कभी सेवानिवृत्त नहीं होता बल्कि नई पीढ़ी को सीख देने को हमेशा प्रयासरत रहता है।

अगले दिन शिक्षक दिवस पर बच्चों को सम्बोन्धित करते हुए श्री मोदी जी ने कहा था कि हम एक अच्छे विद्यार्थी बनें क्योंकि अच्छा विद्यार्थी बनना भी देश की सेवा है। बच्चों को प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा था कि हमें महापुरूषों के जीवन चरित्रों को पढना चाहिए क्योंकि इतिहास पढ़ने से हम इतिहास के करीब होते हैं। लड़कियों की शिक्षा के सम्बन्ध में जब उनसे प्रश्न पूछा गया तो उन्होंने बहुत सुन्दर उत्तर देते हुए कहा था कि लड़कियों को शिक्षा मिलना बेहद जरूरी है क्योंकि मेरा मानना है कि अगर एक लड़का शिक्षा ग्रहण करता है तो वह एक परिवार को शिक्षित करता है लेकिन अगर एक लड़की शिक्षा ग्रहण करती है तो दो परिवारों का भला होता है। एक मायका परिवार और दूसरा ससुराल परिवार भी। उन्होंने कहा था कि यदि मैं शिक्षक होता तो सभी को एक समान समझता। एक शिक्षक को सभी बच्चों को बराबर ध्यान देना चाहिए। हर बच्चे में कोई न कोई गुण जरूर होता है। उसे पहचानना ही शिक्षक का मुख्य काम है। बच्चों को शिक्षा देते हुए कहा था कि मनुष्य को प्रकृति से संघर्ष नहीं करना चाहिए अपितु प्रेम करना चाहिए। उन्होंने इस बात पर बल दिया था कि छात्रों में योग्यता के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए। उन्होंने कहा था कि आज इस बात का जबाव ढूंढना होगा कि आखिर क्यों अधिक सामर्थ्यवान छात्र शिक्षक नहीं बनना चाहता। राष्ट्र का निर्माण करने के बारे में उन्होंने कहा था कि आज राष्ट्र निर्माण को जनान्दोलन बनाने की कोशिश करें।

गुरू और शिष्य का रिश्ता बहुत गहरा है। इसीलिए शिक्षा देने वाले को वैदिक विचारधारा में आचार्य और गुरू कहा गया है और विद्यार्थी या शिष्य को ब्रह्मचारी। आचार्य का अर्थ है- आचारं ग्राहयति इति आचार्यः। इतना ही नहीं कि ब्रह्मचारी को जबानी तौर पर सदाचार की शिक्षा दे, अपितु शिष्य के जीवन में सदाचार को ढाल दे, उसे ऐसी परिस्थिति में रखे कि शिष्य सदाचार को अपने आप ग्रहण करे। वेदों में ब्रह्मचारी और आचार्य शिक्षा के दो बिन्दु हैं और इन दोनों को मिलाने वाली रेखा सदाचार है। अगर आचार नहीं तो आचार्य आचार्य नहीं, शिक्षा शिक्षा नहीं।

आज की प्रचलित शिक्षा पद्धति से हम इस प्रकार की उम्मीद नहीं कर सकते कि वे बच्चों का सम्पूर्ण विकास कर दें। आज की शिक्षा तो केवल बड़ी-बड़ी फीसें लेकर बच्चों को परीक्षा पास करने का ठेका लेती हैं। चरित्र निर्माण का उसमें कोई स्थान नहीं है। बच्चा क्या कर रहा है, उसका रहन-सहन, व्यवहार, खान-पान, संगति कैसी है। इन सबसे आज की शिक्षा का कोई मतलब नहीं रह गया है। पहले शिक्षा में चरित्र को महत्ता दी जाती थी परन्तु आज चरित्र को शिक्षा का अंग ही नहीं समझा जाता। प्राचीन शिक्षा पद्धति में बालक के सम्पूर्ण जीवन का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होता था जैसे आज्ञाकारी बनना, माता पिता की सेवा करना, सत्य बोलना, धर्म का पालन करना आदि शिक्षा भी दी जाती थी। आज की शिक्षा पद्धति में अध्यापक और शिष्य के बीच में इतनी दूरी है कि अध्यापक को अपने विषय से मतलब है और विद्यार्थी इन सभी बातों से अनजान है। आज न तो पहले जैसे शिक्षक रहे जो अपने छात्रों को सही संस्कार दे सके और न ही वे छात्र रहे हैं जो शिक्षक को माता-पिता से भी ऊंचा दर्जा देते हुए देव तुल्य मानें।

शिक्षक दिवस का यह अर्थ नहीं कि साल में एक बार बच्चों के द्वारा गुरू की महिमा के ऊपर भाषण दे दिए गए या फिर बच्चों के द्वारा अपने अध्यापकों को कुछ गिफ्ट दे दिए जाए। बल्कि गुरू और शिष्य के बीच साल भर सांमजस्य बना रहे। अध्यापक का कर्त्तव्य है कि वह केवल अपने विषय तक ही सीमित न रहकर अपने विद्यार्थियों की प्रत्येक गतिविधियों पर नजर रखें। बच्चे का व्यवहार कैसा है, उसकी संगति कैसी है, वह सच बोलता है या झूठ, उसके अन्दर कौन- कौन से गुण हैं और कौन से अवगुण हैं? एक अध्यापक को माली की तरह भूमिका निभाकर बच्चों के जीवन को निखारने का प्रयास करना चाहिए। गुरू देवो भवः के आदर्श को मानने वाले देश में शिक्षकों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए किसी एक दिन की जरूरत नहीं , बल्कि उनका आदर तो हमेशा करना चाहिए। आज फिर विरजानन्द जैसे गुरू और दयानन्द जैसे शिष्य की आवश्यकता है। जिस गुरू ने अपने लिए कुछ नहीं मांगा अपितु राष्ट्र का सुधार करने की प्रतिज्ञा को दक्षिणा के रूप में मांगा और जिस शिष्य ने नतमस्तक होकर गुरू की आज्ञा को स्वीकार किया। ऐसे गुरू और शिष्य ही मिलकर राष्ट्र का भविष्य उज्जवल कर सकते है।

एक गुरू ही विद्यार्थी के जीवन में प्रकाश कर सकता है। गुरू सूर्य के समान है जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश से राष्ट्र चमक उठता है। आज भी ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जो राष्ट्र निर्माण में अपना योगदान दे सके। अपने विषय से हटकर विद्यार्थियों के जीवन निर्माण में भी रूचि लें, उसके अन्दर सद्‌गुणों का विकास करें और विद्यार्थियों का कर्त्तव्य बनता है कि वे अपने अध्यापकों का एक दिन के लिए नहीं अपितु जीवन भर सम्मान करें क्योंकि गुरू के द्वारा ही उसने जीवन में सफलता को प्राप्त किया है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

ज्ञान से प्राणियों की रक्षा

-ले० डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. पर. भारत

जब हम लोकहित की कामना से कोई कार्य करते हैं तो इसके लिए ज्ञान का होना आवश्यक है। भुवपति शास्त्र तथा भुवनपति शास्त्र, दोनों प्रकार के ज्ञान में, पदार्थ में तथा इसके प्रयोग में हम निपुण होकर जीव मात्र के रक्षक बनें। यजुर्वेद का यह दूसरे अध्याय का दूसरा मंत्र इस पर ही उपदेश करते हुए कह रहा है कि:

आदित्यै व्युन्दनमसि विष्णो स्तुपोऽस्यूर्णम्रदसं त्वा स्तृणामि त्वासस्थां

देवेभ्यो भुवपतये स्वाहा भुवनपतये स्वाहा भूतानां पतये स्वाहा।। यजुर्वेद २.२।।

हम जानते हैं कि प्रजापति अग्नि को प्रचंड करने के लिए, ज्ञान कि अग्नि को प्रचंड करने के लिए हमें ज्ञान श्रवण स्वरूप अर्थात् ज्ञान का चम्मच, जिस से ज्ञान रूपी यग्य में हम ज्ञान रूपी घी डाल सकें, ऐसा श्रवण बनता होता है। इसके बिना ज्ञान की अग्नि जल नहीं सकती। यह व्यक्ति इस ज्ञान श्रवण के कार्य में क्यों तत्पर हुआ है, क्यों लगा है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस का उत्तर यह मंत्र देते हुए उपदेश करता है कि :

२. हमारा स्वास्थ्य उत्तम हो: उत्तम स्वास्थ्य से ही मानव जीवन के सब कार्य सिद्ध होते हैं। यदि हम स्वस्थ नहीं तो बिस्तर पर पड़े-पड़े रोते, कराहते रहते हैं, कुछ कर नहीं सकते। अकर्मण्य से हो जाते हैं, असहाय से हो जाते हैं। इसलिए मंत्र कहता है कि हमने स्वास्थ्य के लिए अदीन देवमाता की स्तुति करना है। भाव यह है कि हे जीव ! तेरे अन्दर दूसरों को स्वस्थ रखने वाला ज्ञान हो। दूसरों को स्वस्थ रखने के लिए ज्ञानरूपी एक विशेष प्रकार के जल से तू प्राणी मात्र को भिगोने वाला बन, ज्ञान रूपी जल से प्राणी मात्र को नहला दे, उसे ज्ञान का स्नान कराने वाला है। इस प्रकार तू अन्य लोगों को स्वस्थ, अदीन बनाने के साथ ही साथ दिव्य गुणों से संपन्न करने वाला बन। यह सब करने के लिए ज्ञान रूपी विशेष जल से इन्हें भिगो दे। जब तू ज्ञान का प्रसार करता है तो सब लोगों के जीवन स्वस्थ बनते चले जाते हैं क्योंकि इससे अन्य लोग भी ज्ञान के भंडारी बन जाते है तथा इस ज्ञान के प्रयोग से वह भी अपने अंदर के सब कलुष धोने में सफल होते है तथा कलुष धुल जाने से उनके भी रोगाणु नष्ट हो जाते हैं और स्वस्थ रहने के योग्य बन जाते हैं। इससे ही उनमें आदीनता की श्रेष्ठ भावना का उदय होता है तथा उनके जीवन में दैवीय सम्पती का आगमन होता है।

३. लोकहित के कार्य कर: हे जीव ! तू ही यज्ञ का शिखर है, ज्ञान कि छत है। तू ही उन लोगों का मूर्धन्य है, जिनका जीवन यज्ञमय होता है। इसलिए तेरा यह जीवन सदा ही लोकहित के कार्यो के, जन हित के कार्यों के, अन्यों के उत्तम के लिए लगा रहे। इस कारण तू अपने प्रत्येक कार्य में पहले हित अहित का परीक्षण करता है तथा वह कार्य ही करना उत्तम समझता है, जिस में दूसरों का हित हो। परहित का ही सदा ध्यान रखता है। इस प्रकार तू व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ गया है।

४. दूसरे के सहायक के प्रभु सहायक होते हैं :

हे जीव ! तू निरंतर जन हित का, लोक हितका ध्यान रखने वाला है। तू मूर्धन्य हो कर औरों के जीवनों को ऊपर ले जाने वाला, ऊपर उठाने वाला है। सब की प्रगति की भावना तेरे में है। तू केवल अपनी ही उन्नति नहीं चाहता बल्कि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति देखता है। तू किसी का भी बुरा नहीं चाहता बल्कि सबका हित चाहता है, सब को आच्छादित करता है। तू मृदु स्वभाव वाला है, सदा मधुर ही मधुर, मीठा ही मीठा बोलने वाला है। इसलिए मैं तुझे अपनी शरण में लेता हूँ, अपनी छत्रछाया में रखता हूँ।

जिस प्रकार हमारे घरों की छत सर्दी, गर्मी तथा वर्षा आदि से हमारी रक्षा करती है, उस प्रकार ही मैं तुझे अपनी छत दे रहा हूँ ताकि तू आसुरी आक्रमणों से, राक्षसी प्रवृत्तियों से बचा रह सके, आसुरी प्रवृत्तियों का तेरे ऊपर हमला न हो सके, इन से तेरी निरंतर रक्षा हो सके। इस प्रकार परम पिता परमात्मा की शरण में आने से हम सुरक्षित हो जाते हैं। जो प्रचार का कार्य हम करते हैं। इस प्रकार के कार्य करते हुए अनेक जन ऐसे होते हैं, जो दूसरों को जो उपदेश देते हैं, उस उपदेश को दूसरों के लिए ही समझते हैं। अपने पर अपने ही उपदेश को लागू नहीं करते। इस प्रकार के उपदेश करने वाले तो अनेक मिल जाते हैं किन्तु अपने पर लागू करने वाले बहुत कम मिलते हैं।

५. लोक हितकारी को प्रभु दिव्य गुण देता है : परमपिता परमात्मा कहते हैं कि हे जीव तेरे लिए यह ही आशीर्वाद है कि मैं तुझे दिव्यगुण देता हूं। इन दिव्यगुणों के लिए मैं तुझे यह उत्तम आश्रय स्थल बनाता हूँ। तूने दूसरों को आगे बढ़ाना है। इस कार्य के लिए तेरे पास अनेक प्रकार के दिव्य गुणों का होना आवश्यक है, वह सब दिव्य गुण मैं तुझे देता हूँ।

६. लोक हित के कारण तू स्वाहा का अधिकारी है : परमपिता परमात्मा इस मंत्र के माध्यम से हमें उपदेश कर रहे हैं कि हम उपदेश करते समय केवल दूसरों की कमियां निकालने में ही न लगे रहें। मीठे शब्दों में प्रचार का कार्य करना चाहिये। जो ज्ञान के प्रसारक इस प्रकार से प्रचार करते हैं, प्रभु उनकी रक्षा करते हैं यह एक क्रियात्मक, एक व्यवहारिक तथा एक प्रयोगात्मक ज्ञान है। तेरे इस ज्ञान की वाणी लोगों को अत्यधिक प्रभावित करने वाली है क्योंकि इस में आगम तथा प्रयोग, दोनों प्रकार के ज्ञानों की निपुणता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। इस कारण ही हे सब प्रकार के ज्ञानों के स्वामी मानव ! तेरी यह कल्याणकारी ज्ञान से भरपूर वाणी अत्यन्त प्रभावोत्पादक है। इससे दूसरों को अत्यधिक लाभ हो रहा है। इसलिए तू स्वाहा शब्द का अधिकारी हो गया है। अत: मैं तुझ सब प्राणियों की रक्षा करने वाले को स्वाहा जैसे शुभ शब्दों का उच्चारण करने का अधिकारी बनाता हूँ। इस शुभ शब्द से तू सब का उपकार करने में सफल होगा।

मीठे शब्दों में सब कुछ समझाना चाहिये, सब ज्ञान देना चाहिये।

हे लोक हितकारि मानव ! तू सदा दूसरों के कल्याण की, हित की, शुभ की ही बातें सोचता है, इन सब का हित ही चाहता है। इसलिए तेरे पास कुछ दिव्य शक्तियों का होना आवश्यक होता है। तू दूसरों के हित के लिए अपने हित की भी चिन्ता नहीं करता। इसलिए तुझे चिन्तनशील को जो स्वाहा जैसे उत्तम शब्द का चिन्तन मनन किया जाता है, उच्चारण किया जाता है, यह सब लोक पदार्थों के प्रतिभूत होते हैं। इसलिए यह स्वाहा शब्द तेरे लिए प्रशंसात्मक शब्द है। इन का उच्चारण तेरे लिए ही किया जाता है। तूने अत्यधिक चिन्तन किया है, तूने अत्यधिक मनन किया है। इस प्रकार तू शास्त्रीय ज्ञान के प्रति अर्थात् स्वामी बन गया है। इसके साथ ही साथ इस शास्त्रीय ज्ञान के विषयभूत पदार्थों का भी तू पति है, स्वामी है, मालिक है।

20वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाब बाग उदयपुर राजस्थान का 20वाँ सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव दिनांक 4 नवम्बर से 6 नवम्बर 2017 तक आयोजित किया जा रहा है। सभी धर्मप्रेमी आर्यबन्धुओं से निवेदन है कि इस अवसर पर अपने परिवार एवं इष्टमित्रों सहित कार्यक्रम में पधार कर उच्चकोटि के सन्यासियों एवं विद्वानों का मार्गदर्शन प्राप्त कर जीवन को श्रेष्ठ बनाएं।

-अशोक आर्य कार्यकारी अध्यक्ष न्यास

कुछ सुप्रसिद्ध उद्घोषों पर विचार

-ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबन्दि राय आर्य एण्ज सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

भारत के गौरव पूर्ण इतिहास का यदि हम पैनी नज़र से अवलोकन करे तो हम पायेंगे कि भारत के अनेकों महापुरुषों ने अपने समय के अनुसार अपने कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए समय-समय पर उद्घोष किये हैं जिनका उस समय पर बड़ा प्रभाव पड़ा है और उनको अपने कार्यों में काफी सफलता मिली है। कुछ महापुरुषों के उद्घोष इसी भान्ति है:

१. वैदिक उद्घोष-सब से पहले हम किसी महापुरुष के उद्घोष की बात न करके वेदों के उद्घोष की बात करते हैं। सृष्टि के आदि में ईश्वर ने अनेक युवा स्त्री-पुरुषों को उत्पन्न किया। जिससे आगे की सृष्टि चलती रहे और साथ ही चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य और अंगीरा थे, उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद हैं क्रमश: उच्चारित करवाये यानि ईश्वर ने उन चार ऋषियों के हृदय में एक-एक वेद का ज्ञान प्रकाशित किया और उन्होंने अपने मुख से उच्चरित कर दिया। जैसे कोई व्यक्ति माईक पर बोलता है तो विचार बोलने वाले व्यक्ति के होते है और माध्यम माईक है जो आवाज़ के तेज़ करके सब लोगों के पास पहुँचा देता है। ठीक इसी प्रकार वेद-ज्ञान तो ईश्वर का है, लोगों तक पहुँचाने के लिए चार ऋषियों के मुख से उच्चारित करवा दिया। ईश्वर का वेद-ज्ञान देने का कारण भी यह है कि मनुष्य में नैमित्तिक ज्ञान होता है जो सीखाने से सीखता है, बिना सिखाये वह नहीं सीख सकता। सृष्टि के आदि में माता-पिता व गुरु तो कोई था ही नहीं जो कुछ था वह ईश्वर ही था इसलिए ईश्वर ने मनुष्यों को अपने जीवन में क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं करने चाहिए और वह मोक्ष को कैसे प्राप्त कर सकता है, हम सब को जानने के लिए ईश्वर ने चार ऋषियों से चारों वेद कहलवाए। उन्हीं के अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन में स्वयं भी और दूसरों को भी सुखी बना सकता है और मरने के बाद मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। इन्हीं वेदों में कृण्वन्तो-विश्वमार्यम्'' यानि सारे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ। यह ईश्वर का मनुष्यों के लिए सर्वप्रथम उद्घोष है।

२. भगवान श्री रामचन्द्र जी का-श्री राम चन्द्र जी की जब सीता व लक्ष्मण के साथ पिता जी आज्ञा के अनुसार चौदह वर्ष के लिए बनवास में गये तब वहाँ राक्षसों द्वारा ऋषि-मुनियों पर अन्याय व अत्याचार करते देखा। जब ऋषि-मुनि यज्ञ करते थे तब राक्षस उनके यज्ञों में मांस, शराब आदि फैंक देते थे जिससे ऋषियों का यज्ञ अपवित्र हो जाता था। इस अन्याय को देखकर श्री राम ने हाथ में धनुष लेकर भुजा उठाकर कहा था ''निशिचर हीन करौं नहीं, भुज उठाय प्रण कीन्ह'' यानि मैं इस पूरी धरती पर राक्षसों का विनाश करके रहूँगा और वैसा ही करके दिखा दिया। यह इतिहास का दूसरा उद्घोष है।

३. भगवान श्री कृष्ण का उद्घोष-भगवान श्री कृष्ण ने कौरव-पाण्डवों के युद्ध को टालने की बहुत कोशिश की। जब दुर्योधन किसी रूप में भी नहीं माना। तब युद्ध के बीच में अर्जुन का रथ खड़ा करके गीता का उपदेश दिया, जिसका मुख्य उद्देश्य उद्घोष के रूप में यही था कि मनुष्य को निष्काम कर्म करते रहना चाहिए और उसके फल की इच्छा न रखकर ईश्वर की न्याय व्यवस्था पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए।

४. महावीर स्वामी का उद्घोष-महाभारत के करीब 2500 वर्ष बाद और अब से लगभग 2500 वर्ष पूर्व, महावीर जी स्वामी का जन्म हुआ। उस समय राजाओं के बीच परस्पर लड़ाई झगड़े व युद्ध बहुत हुआ करते थे। स्थिति बहुत शोचनीय थी, तब महावीर जी स्वामी ने उद्घोष के रूप में शान्ति का सन्देश ''अहिंसा परमो धर्म:'' शान्ति स्थापित करने के लिए दिया जिसे हम इतिहास का चौथा उद्घोष कह सकते हैं।

५. महात्मा बुद्ध का उद्घोष-महात्मा बुद्ध का जन्म भी महावीर स्वामी के जन्म के आस-पास हुआ था। उन्होंने भी स्थिति की भंयकरता को देखकर शान्ति का उद्घोष ''बुद्धमशरणम् गच्छामि'' यानि जो जीवन में सुखी रहना चाहता है वह मेरी शरण में आ जाओ। इसे हम पाँचवा उद्घोष मान सकते हैं।

६. पं० लेखराम का उद्घोष-पं० लेखराम आर्य समाज का एक बहुत बड़ा वेद प्रचारक, महर्षि देव दयानन्द का पक्का भक्त व शुद्धि के लिए यानि जो हिन्दू भाई लोभ, लालच व भय से धर्म परिवर्तन घटके मुस्लिम व ईसाई बन गये थे, उनको वेद-मन्त्रों द्वारा युद्ध करके पुन: हिन्दू धर्म में लाने का काम पूरे जीवन में बहुत अधिक किया उसका उद्घोष था ''हे आर्यो! तुम्हारी तहरीर और तकरीर रूकनी नहीं चाहिए। यानि तुम्हारी लेखनी हमेशा चलती रहनी चाहिए ताकि हिन्दू जगता रहे जिससे देश सुरक्षित रहे। यह उद्घोष हिन्दू जाति के लिए तथा देश के लिए बड़ा लाभदायक रहा।

७. क्रान्तिकारी नेता जी सुभाष बोस का-जब वीर सावरकर जी के कहने पर सुभाष चन्द्र बोस रूस होते हुए हिटलर व मुसोलिनी के पास जर्मनी गये। तब हिटलर ने सुभाष चन्द्र बोस को जलयान द्वारा जापान के प्रधान मन्त्री तोजो के पास भेजा और जापान जाकर क्रान्तिकारियों के गुरु कहलाने वाले रास बिहारी बोस से मिले। रास बिहारी बोस ने जापान में वे साठ हजार भारतीय सैनिक जिनको जर्मन और जापान से इंग्लैण्ड और अमेरीका के युद्ध में पकड़कर जापान में कैदी बना कर रखा था। उनसे मिलाया तब उन भारतीय सैनिकों को आह्वान् किया कि हे वीर भारतीय सैनिको! अब तक तो आपने, अपने पेट के लिए लड़ाई लड़ी थी, अब आपको देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़नी है। तब सुभाष बाबू ने उद्घोष किया था कि ''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा'' और ''दिल्ली चलो'' का नारा लगाया था। ये उद्घोष देश को आजादी दिलाने में बड़े सहायक सिद्ध बने हुऐ।

८.महात्मा गाँधी का उद्घोष-महात्मा गाँधी भारत को आज़ादी दिलाने में प्रथम श्रेणी में आते हैं। यह भी सत्य है कि क्रान्तिकारियों के बलिदानों से भयभीत होकर अंग्रेज़ भारत छोड़ कर गये, पर कहलाने को महात्मा गाँधी ही आज़ादी दिलाने वाला कहलाता है। गाँधी जी ने अहिंसा का रास्ता पकड़ा था, पर 1942 के स्वतन्त्रता संग्राम में गाँधी जी ने यह उद्घोष किया था ''अंग्रेजों भारत छोड़ो'' और देश वासियों को कहता था ''करो या मरो'' इन दो उद्घोषों से पूरे देश में क्रान्ति की आग फैल गई जिससे अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। परन्तु जाते-जाते अपनी चालाकी से भारत के दो टुकड़े कर दिये। एक हिन्दुस्तान दूसरा पाकिस्तान जिसमें हमारी आजादी, अधूरी आजादी बन कर रह गई।

९, लाल बहादुर शास्त्री का उद्घोष-भारत को आजादी 15 अगस्त 1947 को मिली। भारत का प्रथम प्रधान मन्त्री पं० जवाहर लाल नेहरू हुए। उनके मरने के बाद 1965 में लाल बहादुर शास्त्री एक सच्चा ईमानदार, सीधा-साधा व्यक्ति अपनी सच्चाई और ईमानदारी से देश का दूसरा प्रधान मन्त्री बना और 1966 में पाकिस्तान ने भारत पर चढ़ाई कर दी, तब शास्त्री जी ने वीर सैनिकों में जोश भरने के लिए नारा दिया ''जय जवान जय किसान''। इससे सैनिकों में और देश भर में बड़ी नव जागृति आई और भारत ने युद्ध में विजय प्राप्त की।

१०. महर्षि देव दयानन्द का उद्घोष-महाभारत के भीषण युद्ध में देश के अधिकतर योद्धा, धर्माचार्य व वैदिक विद्वानों और उपदेशकों के समाप्त हो जाने से वेदों का पठन-पाठन कम हो गया। जिससे देश में अनेकों मत-मतान्तर चलने से अज्ञान, अन्धविश्वास व पाखण्ड का ही बोल-बाला हो गया जिसे देश पवन की अवस्था में चला गया। ऐसे समय में देव दयानन्द का जन्म 1824 में गुजरात देश के टंकारा गराम में हुआ। उसने एवं गुरु बिरजानन्द दी गोद में तीन साल बैठकर यह समझ लिया कि देश की यह स्थिति वेदों के पढ़न-पाठन न होने से हुई है और गुरु के अदेशानुसार पूरे जीवन में वेदों का बहुत अधिक प्रचार

(शेष पृष्ठ 7 पर)

ईश्वर अस्तित्व का प्रमाण–सृष्टि रचना

–ले० अभिमन्यु कुमार खुल्लर 22, नगर निगम क्वार्टर्स, जीवाजीगंज, लश्कर, ग्वालियर-474001 (म. प्र.)

(गतांक से आगे)

1. निश्चय अल्लाह की ओर से दीन (धर्म) इस्लाम है (49)

2. जो अल्लाह के मार्ग में मारे जाते है उनके लिये यह मत कहो कि ये मृतक है, किन्तु वे जीवित हैं (32)

3. अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं। मार डालो। तुम उनको, जहां पाओ। कत्ल से कुफ्र बुरा है–कुफ्र यानि इस्लाम धर्म को न मानना अर्थात् जो इस्लाम धर्म को न माने उसको कत्ल कर देना चाहिए (36)

–यहां तक उनसे लड़ो कि कुफ्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का (36)

4. अल्लाह तुम्हारा उत्तम सहायक और कारसान है। जो तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जावो या मर जाओ, अल्लाह की दया बहुत अच्छी है (54)

5. और अपने हाथों को न रोंके। उनको पकड़ लो और जहां पाओ, मार डालो। जो कोई मुसलमान को जान कर मार डाले, वह सदैव काल दोज़ख में रहेगा। उस पर अल्लाह का क्रोध और लानता है (60)

6. शिक्षा प्रकट होने के पीछे (आशय कुरान अवतरण के बाद) जिसने रसूल से विरोध किया और मुसलमानों के विरुद्ध पक्ष लिया ; अवश्य हम उसको दोज़ख में भेजेंगे (61)

7. निश्चय अल्लाह बुरे लोगों और काफिरों को जमा करेगा दोज़ख (नरक) में।..... ऐ ईमान वालो ! मुसलमानों को छोड़ कर काफिरों को मित्र मत बनाओ (63)

8. काटें जड़ काफिरों की। मैं तुमको सहाय दूंगा, साथ सहस्त्र फरिश्तों के पीछे आने वाले। अवश्य में काफिरों के दिलो में भय डालूंगा। बस मारो, ऊपर गर्दनों के मारों, उनमें से प्रत्येक पोरी (संधि–जोड़–ज्वाइन्ट) पर (79)

9. अल्ला मुसलमानों के साथ है (80)

10. लड़ो उनसे, यहां तक कि न रहे कितना (बल) काफिरों का, और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के। जो कुछ तुम लूटो निश्चय से वास्ते अल्लाह के है। पाचवां हिस्सा उसका और रसूल का (81)

11. कभी तू देखे जब काफिरों को फरिश्ते कब्ज करते हैं, मारते हैं, मुख उनके और पीठ उनकी, और कहते हैं चखो पंजाब जलने का। हमने उनके पाप से उनको मारा और पैरों (मिक्षइंजिप्ट देश) की कौम को डुबो दिया। तैयारी करो वास्ते उनके, जो कुछ तुम कर सको (22) (महर्षि दयानन्द की टिप्पणी–अब देखिए ! यह कैसी बुरी आज्ञा है कि जो कुछ तुम कर सको, या भिन्न मत वालों के लिये दुःखदायी कर्म करो।)

12. अल्लाह मुसलमानों को वरीयता प्रदान करता है, जो विधर्मियों से लड़ते हैं। 20 मुसलमान 200 के लिये भारी पड़ेंगे, उन्हें पराजित करेंगे। लूट का माल हलाल, पवित्र है (83 का सारांश)

13. अल्लाह ने मुसलमानों की सहायता के लिये लश्कर (फौज) उतारे ! अज़ाब किया उन लोगों को। लड़ाई करो उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते (84)

14. निश्चय अल्लाह ने मोल ली हैं मुसलमानों से जाने उनकी। उसके बदले माल (लूट की समस्त वस्तुएं, स्त्रियां, बच्चो तक) और बहिश्त (स्वर्ग) दिया। लड़ेंगे बीच मार्ग अल्लाह के। बस मारेंगे और मर जावेंगे (88)

15. ऐ लोगों ! जो ईमान लाए हो। लड़ो उन लोगों से जो तुम्हारे पास हैं, काफ़िरो से।

कुरान के इन प्रावधानों को दृष्टिगत रखते हुए महर्षि दयानन्द को चौदहवें सम्मुलास का समापन करते हुए लिखना पड़ा।...... मनुष्य के आत्मा को पशुवत बना कर, शान्ति भंग कराके, उपद्रव मचा, मनुष्यों में विद्रोह फैला, परस्पर दुःखोन्नति करने वाला विषय है।

भारत विभाजन के समय 1947 में मुहम्मद अल्ली जिन्ना के द्वारा लगाई गई आग में जम्मू–कश्मीर अभी तक सुलग रहा है। पाकिस्तान बरबाद होकर भी यह आग जलाए रखना चाहता है।

भारत ही नहीं विश्व के अनेक देश इस्लाम के कट्टरवादी आतंकवादी वर्ग की अमानवीय हिंसा का शिकार हो चुके हैं और हो रहें है।

प्रश्न उठना स्वभाविक है कि कभी इस भीषण त्रासदी का अन्त होगा या नहीं ? जरा देखिए तो इस्लाम की आयु कितनी है। मात्र 816 वर्ष। मानवीय इतिहास में यह अत्यन्त अल्प अवधि है। वेद का प्रादुर्भाव हुए लगभग 200 करोड़ वर्ष ! वेद ज्ञान लुप्त हुआ था; समाप्त नहीं हुआ ; नष्ट नहीं। मूल संहिताएं पूर्णरूपेण सुरक्षित हैं।

इस्लाम के अंन्त का प्रारम्भ, पैगम्बर मुहम्मद साहब के मरणोपरान्त ही हो गया था जब उत्तराधिकार को संघर्ष ने जन्म लिया। मुहम्मद साहब की मूलभूत परम्पराओं को मानने वाले सुन्नी कहलाए और उनके दामाद अली साहब के अनुयायी 'शिया' कहलाए। उत्तराधिकार का पद नाम 'खलीफा' था। दोनों के संघर्ष में अली, उनका पुत्र हुसैन मारे गए और दूसरे पुत्र हसन को जहर देकर मरवा दिया गया।

ईराक और ईरान का युद्ध सुन्नी और शिया का था। यह युद्ध दस वर्ष चला। इस युद्ध में पांच लाख इस्लाम के अनुयायी मारे गए। सीरिया के संघर्ष में कौन मारे जा रहे है ? इस्लाम के अनुयायी हो। 1515 व तालिबान किसको मार रहे है ? इस्लाम संहार कर अनुयायियों को ही। पाकिस्तान की सेना बलूचिस्तान में किसका रही है। बलूची मुसलमानों का ही ? अफगानिस्तान में भी तालिवानी आंतकवादियों ने यही किया।

एक तरफ आन्तरिक संघर्ष में इस्लाम खत्म हो रहा है। दूसरी तरफ विश्व की समृद्धशाली शक्तियां जो इस्लामी आंतकवाद से पीड़ित हुई और हो रही है, उसे समूल नष्ट करने में जुट गई है। सीरिया के संघर्ष में रुस ने टैंक उतार कर उसे नष्ट–भ्रष्ट कर दिया। अमेरिका कई देश के मुस्लमानों के प्रवेश पर प्रतिबन्ध लगा चुका है। वह भारत को आंतकवाद के विरुद्ध संघर्ष में साथ देने का संकल्प व्यक्त कर चुका है। खाड़ी देशों का तेल इस्लाम के अनुयायियों का समूल नाश होने से बचाए हुए है। राष्ट्रहित के सामने आर्थिक पथ को नज़रअन्दाज करना ही होगा या कोई वैकल्पिक व्यवस्था करनी होगी। सौर ऊर्जा की भारत में प्रचुरमात्रा में उपलब्धता है। प्रभु जी ने सौर ऊर्जा से संचालित रेलगाड़ी का परीक्षण भी कर दिया है।

उपरान्त दो कारणों से–आन्तरिक संघर्ष व वैश्विक शक्तियों का प्रबल प्रतिरोध, इस्लाम का पतन निश्चित है।

अशांति के कारणों, निदान की चर्चा बहुत हो चुकी।

वेद के सन्देश से, जो सम्पूर्ण मानता के लिये कल्याणकारी है, अपने लेख का समापन करना चाहता हूँ–

द्युलोक (प्रकाशमान लोक) अन्तरिक्ष (बीच का लोक) पृथिवी, आपः (जल), औषधि वनस्पतयः (वृक्षादि), विश्वे (सारे) देवाः (देवता) ब्रह्म (जप और स्वाध्याय) सर्व (सब कुछ) शान्ति (एव) ही शान्ति हो। सा (वह) शान्ति या (मुझे) एधि (प्राप्त) हो।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।

सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, या कश्चिद् दुःख भाग भवेत।

प्रतियोगिता का आयोजन

दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना में तीज का त्यौहार एवं बच्चों में छिपी प्रतिभा को पहचानने के लिए टैलेंट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर बच्चों ने तरह-तरह के कार्यक्रम प्रस्तुत किये। बच्चों ने हास्य रस से भरी कविताओं से सबका मन मोह लिया। इस अवसर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों के स्कूल की तरफ से ईनाम देकर सम्मानित किया गया। स्कूल की प्रिंसिपल ने बताया कि बच्चों के अन्दर की प्रतिभा को पहचानने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिलता है। पढ़ाई के साथ-साथ बच्चों का सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

प्रिंसिपल दयानन्द पब्लिक स्कूल लुधियाना

पृष्ठ 5 का शेष-कुछ सुप्रसिद्ध उद्घोषों...

किया और आगे भी वेद प्रचार होता रहे इसके लिए "आर्य समाज" जैसी क्रान्तिकारी, राष्ट्रवादी व परोपकारी संस्था की स्थापना की और स्वामी जी ने उद्घोष किया कि "वेदो की ओर लौटो"। इस उद्घोष से देश में वेदों का पठन-पाठन, गुरुकुलों का खुलना तथा वेद प्रचार पुनः आरम्भ हो गया। जिससे देश की स्थिति में काफी सुधार हुआ।

नरेन्द्र मोदी का उद्घोष-देश का बड़ा सौभाग्य था कि सन 2014 से लोक सभा चुनावों में बी.जे.पी बहुत अच्छे मतों से जीत कर आई और नरेन्द्र मोदी जैसा त्यागी, तपस्वी, ईमानदार, अनुभवी व देशभक्त भारत का प्रधान मन्त्री बना।

उसने प्रधान मन्त्री बनते ही नारे के रूप में उद्घोष किया कि "सबका साथ, सबका विकास"। इसी नारे पर मोदी जी चल रहे हैं और देश उन्नति व समृद्धिशाली बनने की ओर अग्रसर है। आशा है कि मोदी जी के नेतृत्व में देश पुनः विश्व गुरू व "सोने की चिड़िया" बन कर रहेगा।

जड़ पूजा का रोग

-पं० नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य पत्रकार आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)

आर्यवर्त्त को लग गया, जड़ पूजा का रोग।
नर-नारी इस रोग का, भोग रहे हैं भोग।।
भोग रहे हैं भोग, समझते नहीं अनाड़ी।
पक्के हैं नादान, देश की दशा बिगाड़ी।।
अगर रहा यह हाल, देश यह मिट जाएगा।
हमको फिर ना समझ, सकल जग बतलाएगा।

कबरियों का हो गया, भारत में अब जोर।
काबर लेकर आ रहे, जालिम डाकू-चोर।।
जालिम डाकू-चोर, लफँगे नीच शराबी।
मचा रहे उत्पात, कुकर्मी दुष्ट कबाबी।।
दया-धर्म को त्याग, पाप को पनपाते हैं।
बनते हैं शिव भक्त, तनिक ना शर्माते हैं।।

शिव ईश्वर का नाम है, गुण वाचक लो जान।
आर्यजनों का शिव सदा, करता है कल्याण।।
करता है कल्याण, सकल ऐश्वर्य दाता।
देवों का है देव, जगत का है निर्माता।।
कर्मों का फल यथा-योग्य, देता है स्वामी।
पालन करता वही, मात-पितु-गुरु है नामी।।

सभी जगह मौजूद है, निराकार जगदीश।
ओ३म् नाम प्रभु का बड़ा, मानो बिसवे बीस।।
मानो बिसवे बीस, रात-दिन करो भलाई।
वैदिक धर्मी बनो, मार्ग है यह सुखदाई।।
मूर्ति में है जगदीश, मूर्ति में जीव नहीं है।
"न तस्य प्रतिमास्ति", वेद का वचन सही है।।

जागो! भोले साथियो; बुद्धि से लो तुम काम।
जुटो वेद प्रचार में, करदो जग में नाम।।
करदो जग में नाम, समय मत व्यर्थ गंवाओ।
मानव तन अनमोल, बावलो लाभ उठाओ।।
परोपकारी शीलवन्त, गुणवान बनो तुम।
"नन्दलाल" भारत माता की शान बनो तुम।।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें तथा दूसरों को पढ़ाएं और लाभ उठायें।

श्रद्धांजलि समारोह सम्पन्न

कुछ आर्य परिवार संसार के किसी भी कोने में रह रहे हो। उन्हें अपना वैदिक धर्म नहीं भूलता इसी तरह धवन परिवार लगभग 18 साल से कनाडा के शहर मनीटोबा (थामसन) में रह रहा है। श्री विजय धवन जो कि 28-8-2009 को कनाडा में थे वहीं उनका स्वर्गवास हुआ था। उनका श्रद्धांजलि (रस्म पगड़ी) का प्रोग्राम करने के लिये उनकी पत्नी श्रीमति बीना धवन तथा उनके बेटे विकास तथा नीरज विशेष रूप से फिरोज़पुर आये थे। उनकी परिवार की इच्छा थी कि वैदिक रीति से उनका श्रद्धांजलि का कार्यक्रम हो तथा उन्होंने किया। तब से लेकर आज तक प्रत्येक वर्ष 28 अगस्त को फिरोजपुर शहर के आर्य समाज मन्दिर (गुरुकुल विभाग) फिरोज़पुर शहर में शान्ति यज्ञ करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है क्योंकि स्वर्गीय श्री विजय धवन जब तक जीवित रहे। आर्य परिवार से जुड़े होने के नाते आर्य समाज के सदस्य रहे। शान्त स्वभाव के साथ-साथ हमेशा गरीबो की मदद करते रहते थे। उदाहरण गरीब बच्चों को स्कूलो में जाकर पाठ्य सामग्री देना गरीबो को खाना खिलाना, सर्दी में कम्बल बाटना यह तो उनका रोटीन वर्क था। इसके अलावा भी कई संस्था के साथ जुड़े हुये थे। आज उनके दोनों बेटे विकास तथा नीरज उनके पद् चिन्हों पर चल कर अपने पिता द्वारा ही गई शिक्षा पर अमल कर रहे है। चाहे वह भारत में कम ही आते है परन्तु उनका ध्यान अपने पिता द्वारा छोड़े अधूरे कामो की ओर रहता है तथा वह उन्हें लगातार पूरा करने की कोशिश कर रहे है। उनकी धर्म पत्नी श्रीमति बीना धवन पिछले वर्ष भारत आकर आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग के भवन निर्माण में एक लाख नगद देकर अपने पति की इच्छा को पूर्ण किया क्योकि स्वः श्री विजय धवन जी की इच्छा थी कि भवन नया बने।

हमारा यह लेख लिखने का यही अर्थ है कि हम आर्य है, आर्य बने रहे तथा कही भी चले जाये आर्य समाज मन्दिर तथा अपने आर्य नियमों को ना भूले हमें भी कनाडा में रह रहे धवन परिवार से कुछ सीखना होगा।

(महामन्त्री)

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

वेद प्रचार सप्ताह एवं श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर अड्डा होशियारपुर जालन्धर में वेद सप्ताह के अवसर पर प्रवचन करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री एवं चित्र दो में यज्ञ में भाग लेते हुये सोहन लाल सेठ, श्रीमती नीलम सेठ, अमित जग्गी, शिवानी जग्गी, राज रत्ती, उषा शर्मा, डा. सुरूचि सेठ, सेजल सेठ एवं अन्य।

आर्य समाज मन्दिर अड्डा होशियारपुर जालन्धर में श्रावणी उपाकर्म के उपलक्ष्य में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक 21 अगस्त से 27 अगस्त 2017 तक बड़े उत्साहपूर्वक किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रातः स्वास्ति याग के मन्त्रों से यज्ञ किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा पं. सुन्दर लाल जी शास्त्री चण्ड़ीगढ तथा भजनोपदेशक श्री राजेश अमर प्रेमी जी थे। प्रतिदिन प्रात:काल के वेला में यज्ञ तथा सायंकाल को भजन एवं वेदोपदेश शनिवार तक होते रहे।

दिनांक 27 अगस्त रविवार को प्रातः हवन यज्ञ के द्वारा मुख्य कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। श्री सोहन लाल सेठ जी, श्रीमती नीलम सेठ, अमित जग्गी, शिवानी जग्गी, शोभित सेठ, मेघा सेठ तथा सम्पूर्ण परिवार ने यजमान बनकर यज्ञवेदी को सुशोभित किया। यज्ञ के ब्रह्मा तथा अन्य सभी विद्वानों ने मुख्य यजमान तथा एक सप्ताह भर बनने वाले सभी यजमानों को पुष्पवर्षा के द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया। सभी श्रद्धालुओं ने यज्ञप्रसाद लेकर जलपान ग्रहण किया। जलपान के पश्चात मुख्य वेद सप्ताह का कार्यक्रम शुरू हुआ। सर्वप्रथम श्री अनिल गुप्ता ने दो भजन सुनाकर प्रभु महिमा का गुणगान किया। श्री राजेश अमर प्रेमी जी ने अपने मधुर भजनों के द्वारा ऋषि महिमा का गुणगान किया। चण्ड़ीगढ़ से पधारे हुए आचार्य सुन्दर लाल शास्त्री जी ने कहा कि परमात्मा की रचना बड़ी अद्‌भुत है, उसका कोई पार नहीं पा सकता।

उसकी बनाई हुई सृष्टि नियम के अनुसार चलती है। वह हमें प्रत्यक्ष रूप से भले ही दिखाई नहीं देता परन्तु उसकी नजर हमारे प्रत्येक अच्छे और बुरे कर्म पर रहती है। उन्होंने सभी को वेदों का अध्ययन करके उसके ज्ञान को व्यवहार में लाने की प्रेरणा दी। आचार्य सानन्द जी ने कहा कि सभी लोगों को अपना जीवन गुलाब के फूल की तरह बना लेना चाहिए जिससे दूसरों को सुगन्धि प्रदान कर सके। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. श्री विजय कुमार शास्त्री जी ने कहा कि हमें अपने बड़े बुजुर्गों की सेवा तथा माता-पिता और आचार्यों का आदर करना चाहिए क्योंकि ये सभी अपने बच्चों का हित चाहते हैं। सभा के विद्वान् आचार्य सुरेश शास्त्री जी ने कहा कि श्रावणी उपाकर्म स्वाध्याय की प्रेरणा देता है।

वेद का पढ़ना-पढ़ाना एवं सुनना-सुनाना सभी के लिए हितकर है, इससे मनुष्य का आत्मिक एवं मानसिक विकास होता है। श्री राजेश अमर प्रेमी जी ने जित्थे-जित्थे वेखया, तेरा नूर वेखया भजन सुनाकर सभी को निहाल कर दिया। यह सारा कार्यक्रम आर्य समाज के प्रधान श्री विनोद सेठ जी की अध्यक्षता में हुआ। मंच का संचालन लब्भू राम दोआबा सी. सै. स्कूल के प्रिंसिपल श्री श्रवण भारद्वाज जी ने किया।

कार्यक्रम के अन्त में श्री सोहन लाल सेठ जी ने सभी विद्वानों का धन्यवाद किया और कहा कि हमें विद्वानों द्वारा बताए गए मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम सभी विद्वानों द्वारा बताई गई बातों को अपने जीवन में धारण करें और श्रेष्ठ मार्ग पर चलने का संकल्प लें।

इस अवसर पर सर्वश्री राजिन्द्र विज, सत्यशरण गुप्ता, सुदेश सेठ, सुनीता भारद्वाज, ऊषा शर्मा, राजरत्ती रानी, विपन शर्मा, रमेश कालड़ा, राजेश आर्य, पूनम मदान, अश्विनी सूर, जसवन्त राज व अन्य महानुभाव उपस्थित थे। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम के पश्चात सभी श्रद्धालुओं ने ऋषि लंगर ग्रहण किया।

गुरूकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।